अमृता

प्रथमो भागः

षष्ठवर्गस्य कृते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत
पाठ्य-पुस्तकों का निःशुल्क वितरण।
क्रय - विक्रय दण्डनीय अपराध।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

सर्व शिक्षा अभियान : 2013-14 - 19,19,890

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना - 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा मिसलेनियस प्रिंटर्स, मीठापुर, पटना - 1 द्वारा एच. पी. सी. के 70 जी. एस. एम. क्रीम वोभ टेक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) तथा एच. पी. सी. के 130 जी. एस. एम. ह्वाईट (वाटर मार्क) आवरण पेपर पर कुल **19,19,890** प्रतियाँ 18 × 24 सेमी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इसी क्रम में शैक्षिक सत्र 2010-11 के लिये वर्ग I, III, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर-भाषायी पाठ्य-पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की गयीं। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI एवं X की सभी अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गयीं। इस सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011-12 के लिए वर्ग II, IV एवं VII तथा शैक्षिक सत्र 2012-13 के लिए वर्ग V एवं VIII की नई पाठ्य-पुस्तकें बिहार राज्य के छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ-ही-साथ वर्ग I से VIII तक की पुस्तकों का नया परिमार्जित रूप भी शैक्षिक सत्र 2013-14 के लिए एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना, के सौजन्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार; शिक्षा मंत्री, श्री पी. के. शाही एवं शिक्षा विभाग, के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली तथा एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

जे. के. पी. सिंह, भा०रे०का०से०
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राहुल सिंह,** राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् पटना
- **श्री रामशरणागत सिंह,** संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार विशेष कार्य पदाधिकारी, बी.एस.टी.बी.पी.सी., पटना
- **श्री अमित कुमार,** सहायक निदेशक, प्राथमिक शिक्षा निदेशालय, बिहार सरकार
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य,** शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **श्री हसन वारिस,** निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **श्री मधुसूदन पासवान,** कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् पटना
- **डॉ. एस. ए. मुईन,** विभागाध्यक्ष, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी,** प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर

संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति

विषय विशेषज्ञ – प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक – डॉ० सुरेन्द्र कुमार, व्याख्याता (बि० शि० से०) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना-800 006

लेखक सदस्य –
1. डॉ० सीताराम झा, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, हाबीभौआर, बेनीपुर, दरभंगा
2. श्री रामकृपाल साह, प्रधानाध्यापक, राजकीय मध्य विद्यालय, गरहाँ, बोचहाँ, मुजफ्फरपुर
3. श्री पूरण साह, सहायक शिक्षक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजेन्द्रनगर, पटना-800 016
4. डॉ० शिवशंकर प्रसाद, सहायक शिक्षक, उच्च विद्यालय, आँती, कादिरगंज, नवादा
5. डॉ० मधु बाला सिन्हा, व्याख्याता, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
6. शहिद आलम, सहायक शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, हड़सर धनौती, सिवान
7. (श्री) शंभू राय, सहायक शिक्षक, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलजारबाग, पटना सिटी
8. (श्रीमती) प्रियंका, सहायक शिक्षिका, अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय, उसफा, पटना

समीक्षक –
1. प्रो० ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार, पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
2. प्रो० अशोक कुमार, आचार्य, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

आभार – यूनिसेफ, बिहार, पटना

पुरोवाक्

संस्कृतं भारतवर्षस्य अतीव महत्त्वपूर्णा भाषा। अस्या अध्ययनं विद्यालयेषु परम्परया क्रियते विविधैर्विषयैः सह। छात्राणां सामञ्जस्यं च संस्कृतादिभिः विषयैः समं विद्यालयशिक्षाकाले संस्थापितमभूत्। क्रमेण 2005 तमे ईस्वीवर्षे राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखा प्रकाशिता जाता यत्र छात्राणां विद्यालयजीवनस्य संयोजनं विद्यालयेतरजीवनेन भवेदितित्यनुशंसितम्। इतः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायां पुस्तकीयं ज्ञानमेव रेखाङ्कितमासीत्, यत्र विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्येऽन्तरालं पोषितम्। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यपुस्तकानि तु मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते। संस्कृतविषयस्यानुशीलने बिहारराज्येऽपि तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि भवेयुरिति संकल्पोऽस्माकम्। आशास्महे यदस्माकमभिनवः प्रयासः 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रियशिक्षानीतौ अनुशंसितायाः बाल-केन्द्रित शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय कल्पिष्यते।

अस्य सफलता तु विद्यालयानां प्राचार्याणां शिक्षकाणां च तथाभूतान् प्रयासानालम्बते यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाशीलतायाः विकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अत्र स्वीकरणीयमेव तथ्यमेतद् यद् रुचिपूर्णा पाठसामग्री, तदनुशीलनाय स्वतन्त्रता च यदि छात्रेभ्यो दीयते तदा ते वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य स्वयमेवं नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापको भवेत्, न तु पाठ्यपुस्तकाश्रितं ज्ञानमात्रम्। बालकेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भ-प्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् सर्वानपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु केवलस्य निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकरूपेण।

एतान्युद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिकसमयसारण्यां परिवर्तनशीलता अपेक्षिता, तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परतापि अनिवार्या। तदैव शिक्षणार्थं नियते काले वास्तविकं शिक्षणं सम्भवति। नूनं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेश्च दृष्ट्या पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूतये प्रभावकं भविष्यति, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निधारणेन प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, उत्सुकतावृद्धेः, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च प्रभूतमवसरं दास्यति।

बिहारराज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षणपरिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृतपाठ्यपुस्तकविकाससमितेः अध्यक्षाय विश्रुतयशसे डॉ० उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च भूयोभूयः साधुवादं वितरति, स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति। तदनु पाठ्य-पुस्तक-निर्माणक्रमे संयोजककर्मणि दत्तचित्ताय डॉ० सुरेन्द्र कुमार पालाय च महान्तमाभारं प्रकाशयति ।

हसन वारिसः
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

भूमिका

संस्कृत भाषा संसार की उपलब्ध और जीवित भाषाओं में ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीनतम है। अपने हजार वर्षों के लम्बे इतिहास में संस्कृत भाषा ने पर्याप्त संघर्ष किया है। भारत की अनेक अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को आत्मसात् करके इसने समस्त भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व अपने साहित्य के द्वारा किया है। भारत की अधिसंख्य भाषाएँ (जैस-हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमिया, मैथिली आदि) इसी से निकली है। दक्षिण भारत की भी भाषाओं ने इसकी शब्द-सम्पदा को पर्याप्त रूप से आत्मासात् किया है। इसप्रकार संस्कृत को प्राचीन काल से ही भारतीय स्तर पर लोकप्रियता प्राप्त हुई है। भारतवर्ष की बहुभाषिता को सर्वोत्तम कड़ी संस्कृत में ही मिलती है। इस दृष्टि से संस्कृत का अध्ययन भाषा और साहित्य दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

भारतीय संस्कृति की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि और प्रसार में संस्कृत भाषा का ज्ञान और अध्ययन वर्त्तमान शिक्षा-पद्धति में भी सभी ने आवश्यक माना है। विद्यालय स्तर पर संस्कृत शिक्षण के रुचिकर रूप पर बल देते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ई० के आलोक में स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार तथा बिहार राज्य की शैक्षिक आवश्यकता के अनुसार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार द्वारा संस्कृत की पाठ्यपुस्तकों के विकास का कार्यक्रम बनाया गया है। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषा शिक्षा विभाग द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक श्रृंखला अमृता का विकास किया गया है। इनमें नैतिक एवं शिक्षाप्रद मूल्यों से परिपूर्ण गद्य-पद्य पाठों का समावेश किया गया है।

संस्कृत के प्रारंभिक छात्रों के स्वस्थ भाषिक मनोरंजन के लिए इनमें रुचिवर्धक, ज्ञानवर्धक तथा आकर्षक सामग्री का समावेश किया गया है। इस पुस्तक-श्रृंखला के सभी भाग विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में भारतीय संस्कृति की अमर स्रोतस्विनी संस्कृत भाषा के प्रति रुचि तो उत्पन्न करेंगे ही, साथ ही इस भाषा का स्वयं प्रयोग करने की क्षमता भी दे सकेंगे। छात्र क्रमशः संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति अपेक्षित कुशलता पा सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

इसी श्रृंखला का प्रथम पुष्प-अमृता प्रथमो भागः छात्रों के लिए प्रस्तुत है। इस पुस्तक के निर्माण

में इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और छात्र-छात्राओं के बीच अन्त:क्रिया प्रश्नोत्तर के माध्यम से हो जो क्रमश: संस्कृत में हो तो और भी अच्छा है। छात्रों में संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने में कुशलता प्राप्त हो जो उनके जीवन में उपयोगी हो सके।

विद्यालय स्तर पर संस्कृत की यह प्रथम पाठ्यपुस्तक है इसलिए इसमें चित्रों के आधार पर संस्कृत के सरल शब्दों का ज्ञान देने का कार्यक्रम रखा गया है किन्तु शब्द स्वच्छन्द नहीं अपितु वाक्य में दिए गए हैं जिनसे वाक्य-प्रयोग में छात्रों को कठिनाई न हो। कई पाठों में दैनिक उपयोग के शब्दों और क्रियाओं का परिचय देने के अतिरिक्त संख्यावाचक शब्दों को भी प्रस्तुत किया गया है जिनसे छात्रों को अन्य भाषाओं के संख्या वाचक शब्दों का स्रोत ज्ञात हो।

पाठों का चयन इसप्रकार किया गया है कि छात्र उनमें रुचि ले सकें। प्राचीन कथाओं में एक 'शशसिंहकथा' है जिसका उद्देश्य बुद्धि का महत्त्व दिखाना है। कुछ सुभाषित और नीतिश्लोक के पाठ हैं जिनका दैनिक जीवन में सदा उपयोग होगा। अन्य पाठ छात्र के आसपास के परिवेश से जुड़े हुए हैं जो पढ़नेवालों को अत्यन्त रुचिकर लगेंगे; जैसे–मम परिवार:, जलमेव जीवनम्, खेलक्षेत्रम्, सामाजिकं समत्वम्, गङ्गानदी। कुल मिलाकर यह प्रारंभिक संस्कृत पाठ्यपुस्तक संस्कृत के अध्येताओं और अध्यापकों के लिए भार रूप नहीं होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

इसमें कुल बारह पाठ हैं। प्रत्येक पाठ के अन्त में उससे सम्बद्ध अधिकाधिक शब्दों के अर्थ, आवश्यक व्याकरण, मौखिक और लिखित अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं। इनके द्वारा कक्षा में छात्रों को निरंतर सक्रिय रखा जा सकता है। पुस्तक के अन्त में प्रमुख शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं जिनका उद्देश्य समय-समय पर उन्हें बार-बार देखना तथा उपयोग करना है। उन्हें कण्ठस्थ करना हमारा लक्ष्य नहीं है।

इस पुस्तक-शृंखला के प्रथम भाग में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है–

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण।
- प्रश्नोत्तर माध्यम से शिक्षक-छात्र की अंत:क्रिया।
- भाषिक तत्त्वों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के प्रयोग की क्षमता
- नैतिक मूल्यों से युक्त संस्कृत पद्यों का परिचय
- संस्कृत की वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता

- प्रत्येक पाठ में शब्दार्थ का परिचय
- प्रत्येक पाठ में अपने आसपास के परिवेश का परिचय
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता
- पाठों के अनुरूप चित्रों का संयोजन

शिक्षक की भूमिका :

किसी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक को कितना भी वैज्ञानिक और रोचक बनाया जाय उसकी महत्ता शिक्षक द्वारा ही अंकित की जाती है। इसलिए अध्यापन-कार्य में लगे हुए शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। एक ओर अध्यापन-कार्य में जहाँ तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा होती है वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित भाषिक तत्वों तथा विषयगत बिन्दुओं के सम्प्रेषण तथा अधिगम में कुशल अध्यापन-शैली भी आवश्यक है। शिक्षकगण अपनी रोचक अध्यापन-शैली से इस पुस्तक की बातों को छात्रों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे तो पाठ्यपुस्तक के निर्माण का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

बिहार के बहुभाषिक परिवेश में शिक्षक संस्कृत के अतिरिक्त यथासाध्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी माध्यम बनाते हुए छात्रों में संस्कृत भाषा में दक्षता-प्राप्ति के निमित्त बनें तथा संस्कृत की ओर छात्रों को अधिकाधिक उन्मुख करें। वे यह दिखाने का अधिकाधिक प्रयास करें कि संस्कृत कोई विचित्र और कठिन भाषा नहीं अपितु हमसब की भाषाओं की जननी है। इसी के शब्दों को थोड़ा परिवर्तित रूप में हम बोलते हैं।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए अभ्यासों तथा विभिन्न पाठों के वाक्यों को आधार बनाकर अनुप्रयुक्त (Applied) रूप से करें। इससे व्याकरण भाररूप नहीं रहेगा अपितु भाषा की अभिव्यक्ति में वह सहायक विषय का काम करेगा। छात्रों में संस्कृत के प्रति कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास छात्रों में किया जाये। अध्यापकों का यह कर्त्तव्य है कि अपने अनुभव से, पुस्तक में दिए गए अभ्यासों के अतिरिक्त भी, नए अभ्यासों की सर्जना करें जिससे छात्रों की आंतरिक वृत्ति संस्कृतमय हो सके। अपने आसपास की चीजों को संस्कृत में छात्र प्रकाशित कर सकें।

संस्कृत भाषा की यह विशिष्टता है कि इसमें प्रत्येक प्रयुक्त पद व्याकरण के नियमों से परिपुष्ट होता है, प्रत्येक पद की व्युत्पत्ति होती है, एक-एक पद नए-नए पदों को जन्म देता है जिससे आरंभिक

छात्र भी सैकड़ों संस्कृत शब्दों से परिचित हो जाते हैं। शिक्षक यदि चाहे तो शब्दों के पर्याय शब्द, विलोम शब्द तथा उनके प्रयोग भी कक्षा में सिखाएँ। संधि के कठिन नियम, समास की जटिलता तथा विभक्तियों के प्रयोग के कठिन नियमों में आरंभिक कक्षा में न जाएँ। तभी संस्कृत भाषा का अध्ययन छात्रोपयोगी तथा आकर्षक होगा, शिक्षक की लोकप्रियता बढ़ेगी।

आशानुरूप पूर्व के संस्करण पर विभिन्न स्रोतों से सारगर्भित सुझाव प्राप्त हुए। उन सुझावों के आधार पर इस नये संस्करण को संशोधित एवं परिमार्जित कर लिया गया है। हम सुझाव देनेवालों के प्रति आभारी हैं। अब आशा है कि उपर्युक्त तथ्यों पर शिक्षकबंधु एवं सुधीजन पुन: ध्यान देंगे। यद्यपि पाठ्यपुस्तक के लिए सामग्री प्रस्तुत करने में प्रतिभागियों ने यथासाध्य परिश्रम किया है, निर्देशानुसार उन्होंने अभ्यास तथा अन्य उपयोगी सामग्री देकर इसे परिष्कृत करने का पूरा प्रयास किया है तथापि पाठ्यपुस्तक के लेखन से मुद्रण तक के विभिन्न स्तरों में जो स्खलन हुए हों उसके लिए अग्रिम क्षमा मांगने के अतिरिक्त यह अनुरोध भी करता हूँ कि अपने परामर्शों से अध्यापकबन्धु मुझे अवगत कराएँ तथा पुस्तक की व्यापक परिष्कृति में अपनी भागीदारी भी सुनिश्चित करें।

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
1.	प्रार्थना	1–3
2.	सरलपदपरिचयः	4–13
3.	संख्याज्ञानम्	14–25
4.	क्रियापदपरिचयः	26–34
5.	मम परिवारः	35–39
6.	सुभाषितानि	40–44
7.	शश–सिंहकथा	45–49
8.	जलमेव जीवनम्	50–54
9.	खेलक्षेत्रम्	55–60
10.	सामाजिकं समत्वम्	61–65
11.	गङ्गानदी	66–71
12.	नीतिश्लोकाः	72–75
	व्याकरणम्: (क) शब्दरूपाणि (ख) धातुरूपाणि	76–84
	आवश्यकः शब्दकोषः	85–89
	क्रियाकोषः	90–91